# संज्ञा एवं परिभाषा प्रकरण

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

## अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

### » संज्ञा का अर्थ और आवश्यकता

**प्रश्न 1 (आसान). व्याकरण में संज्ञा का अर्थ क्या है?**
उत्तर – व्याकरण में प्रत्येक व्यक्ति/पदार्थ को अभिहित करने के लिए जो नाम दिया जाता है, वही संज्ञा है।

**प्रश्न 2 (आसान). संज्ञा और परिभाषाओं से व्याकरण-प्रक्रिया में क्या लाभ होता है?**
उत्तर – स्पष्टता और लाघव (संक्षेप) मिलता है।

**प्रश्न 3 (मध्यम). अगर संज्ञा और परिभाषाएँ न हों तो व्याकरण-लिखाई में क्या समस्या हो सकती है?**
उत्तर – हर बार लंबा वर्णन करना पड़ेगा, लिखाई बढ़ेगी और भ्रम का खतरा भी बढ़ेगा।

**प्रश्न 4 (कठिन). “लाघव” शब्द का अर्थ इस संदर्भ में लिखिए और कारण बताइए कि यह कैसे आता है।**
उत्तर – लाघव का अर्थ संक्षेप (कम शब्दों में काम) है। संज्ञा तय होने से नियम लागू करने के लिए बार-बार विस्तृत वर्णन नहीं करना पड़ता, इसलिए कम शब्दों में काम हो जाता है।

### » आगम (मित्रवत् संयोग/जुड़ाव)

**प्रश्न 5 (आसान). आगम का मतलब क्या है?**
उत्तर – मित्रवत् संयोग से दो वर्णों के बीच जो जुड़ाव होता है, उसे आगम कहते हैं।

**प्रश्न 6 (आसान). आगम पहचानने के लिए सबसे पहले किस जगह देखना चाहिए?**
उत्तर – दो वर्ण/ध्वनियों के बीच की जगह (बीच का भाग) देखना चाहिए।

**प्रश्न 7 (मध्यम). ‘वृक्ष + छाया’ में आगम कहाँ होता है और कौन-सा होता है?**
उत्तर – ‘वृक्ष’ के ‘अ’ और ‘छाया’ के ‘छ’ के बीच ‘च्’ का आगम होता है।

**प्रश्न 8 (कठिन). अगर किसी संयोग में तुम्हें ‘बीच में नया वर्ण/ध्वनि जुड़ती’ दिखे, तो तुम किस संज्ञा के नियम का उपयोग करोगे?**
उत्तर – आगम (मित्रवत् संयोग/जुड़ाव) का नियम।

### » आदेश (स्थान-पर प्रतिस्थापन)

**प्रश्न 9 (आसान). आदेश का अर्थ क्या है?**
उत्तर – किसी वर्ण को हटाकर उसी के स्थान पर दूसरा वर्ण आ बैठना।

**प्रश्न 10 (आसान). “यदि + अपि = यद्यपि” में किस स्थान-पर प्रतिस्थापन से बदलाव आया?**
उत्तर – ‘इ’ के स्थान पर ‘य्’ आया।

**प्रश्न 11 (मध्यम). आदेश पूर्व-वर्ण के स्थान पर भी हो सकता है और पर-वर्ण के स्थान पर भी–इसका भाव एक पंक्ति में लिखो।**
उत्तर – बदलने वाला वर्ण कभी उस जगह होता है जहाँ पूर्व वर्ण था, और कभी उस जगह जहाँ पर वर्ण था।

**प्रश्न 12 (कठिन). यदि कोई रूप बनते समय ‘बीच में नई ध्वनि जुड़ने’ जैसा लगे, तो तुम सबसे पहले किस बात से पहचानोगे कि वह आगम है या आदेश?**
उत्तर – सबसे पहले देखो: पहले वर्ण ‘हटा’ है या ‘जुड़’ गया है। आदेश में हटकर उसी स्थान पर दूसरा बैठता है; आगम में दोनों के बीच नई ध्वनि जुड़ती है।

### » उपधा (अंतिम से पहले वाला वर्ण)

**प्रश्न 13 (आसान). "चिन्त्" में उपधा कौन-सा है?**
उत्तर – न् (त् के ठीक पहले)

**प्रश्न 14 (आसान). उपधा का मतलब क्या होता है?**
उत्तर – अंतिम वर्ण से ठीक पहले वाला वर्ण

**प्रश्न 15 (मध्यम). अगर किसी शब्द का अंतिम वर्ण 'क्' हो, तो उपधा कौन-सा स्थान होगा?**
उत्तर – 'क्' से ठीक पहले वाला वर्ण

**प्रश्न 16 (कठिन). "अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा" का प्रयोग करके बताओ–उपधा हमेशा किस तरह चुना जाता है?**
उत्तर – शब्द के अंतिम वर्ण से पहले वाले (ठीक पूर्व) वर्ण को

### » पद-संज्ञा और अपद प्रयोग-वर्जन

**प्रश्न 17 (आसान). 'सुप्तिङन्तं पदम्' से क्या समझते हैं?**
उत्तर – जो शब्द सुप्तिङन्त रूप में हो वही 'पद' है।

**प्रश्न 18 (आसान). अपद का प्रयोग वाक्य में क्यों नहीं करना चाहिए?**
उत्तर – क्योंकि जिस शब्द में पद-संज्ञा नहीं होती उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

**प्रश्न 19 (मध्यम). 'वद्' को उसी रूप में वाक्य में रखने पर क्या होगा?**
उत्तर – वद् केवल धातु-मूल है, पद-संज्ञा नहीं बनेगी; इसलिए इसे वाक्य में नहीं रखना चाहिए।

**प्रश्न 20 (कठिन). अगर कोई लिखे: 'राम शत्रु' (बिना विभक्ति/सही रूप के), तो क्या मुख्य नियम लागू होगा?**
उत्तर – अपदं न प्रयुञ्जीत–क्योंकि 'राम' का पद-संज्ञा-रूप (जैसे रामः/रामम्/रामस्य आदि) तय नहीं है, इसलिए वाक्य-प्रयोग गलत होगा।

### » निष्ठा (क्तक्तवतू-प्रत्यय)

**प्रश्न 21 (आसान). निष्ठा किन प्रत्ययों को कहते हैं?**
उत्तर – क्त (त) और क्तवतू (तवत्) को निष्ठा कहते हैं।

**प्रश्न 22 (आसान). निष्ठा के योग से कौन-से क्रियापद बनते हैं?**
उत्तर – भूतकालिक क्रियापद बनते हैं।

**प्रश्न 23 (मध्यम). 'गतः' और 'गतवान्' किस प्रकार के क्रियापद हैं?**
उत्तर – ये भूतकालिक क्रियापद हैं (निष्ठा के योग से)।

**प्रश्न 24 (कठिन). अगर किसी रूप में भूतकालिक क्रिया बन रही है, तो तुम्हें किन प्रत्ययों (निष्ठा) की ओर ध्यान देना चाहिए?**
उत्तर – क्त (त) और क्तवतू (तवत्) की ओर।

### » विकरण (धातु-तिङ् के बीच के प्रत्यय)

**प्रश्न 25 (आसान). धातु और तिङ् के बीच आने वाले शप्(अ) श्यन्(य) श्नुनु(नु) आदि प्रत्यय को क्या कहते हैं?**
उत्तर – विकरण

**प्रश्न 26 (आसान). भवति में 'भू' और 'तिति' के बीच कौन-सा विकरण आता है?**
उत्तर – शप् (अ)

**प्रश्न 27 (मध्यम). यदि किसी रूप में धातु और तिङ् के बीच 'य' आए, तो वह किस विकरण का संकेत है?**
उत्तर – श्यन् (य)

**प्रश्न 28 (कठिन). क्यों कहा जाता है कि विकरण-भेद से धातुएँ 10 गणों में विभक्त होती हैं? एक कारण-तर्क लिखो।**
उत्तर – क्योंकि धातु के तिङ् के साथ जुड़ते समय धातु-तिङ् के बीच आने वाला विकरण (अ/य/नु आदि) निश्चित होता है; उसी विकरण के भेद से धातु का वर्ग (गण) तय किया जाता है।

### » संयोग (हल-व्यंजन की परस्पर समीपता/व्यवधान-रहित भाव)

**प्रश्न 29 (आसान). 'अस्ति' में संयोग कौन सा है?**
उत्तर – 'स्' और 'त्' का संयोग।

**प्रश्न 30 (आसान). किस स्थिति में संयोग नहीं होगा–जब हल-हल के बीच स्वर आ जाए तो?**
उत्तर – संयोग नहीं होगा, क्योंकि व्यवधान/स्वर आ गया।

**प्रश्न 31 (मध्यम). 'गच्छति' में 'च्' और 'छ्' संयोग क्यों है?**
उत्तर – क्योंकि 'च्' के तुरंत बाद 'छ्' आता है और बीच में कोई स्वर नहीं आता–हल-हल व्यवधान-रहित समीप हैं।

**प्रश्न 32 (कठिन). एक वाक्य में 'क' (हल्) के बाद 'अ' (स्वर) और फिर 'ख' (हल्) आए, तो क्या 'क+ख' का संयोग होगा? कारण लिखो।**
उत्तर – नहीं। क्योंकि 'क' और 'ख' के बीच 'अ' स्वर आ गया है, इसलिए 'हल्-हल्' की व्यवधान-रहित समीपता नहीं बनी।

### » संहिता (व्यवधान-रहित निकटसमीपता)

**प्रश्न 33 (आसान). संहिता का मतलब क्या है?**
उत्तर – वर्णों की व्यवधान-रहित अत्यन्त निकटसमीपता।

**प्रश्न 34 (आसान). संधि-कार्य किस स्थिति में होते हैं?**
उत्तर – जब संहिता की स्थिति हो।

**प्रश्न 35 (मध्यम). अगर दो शब्दों को बोलते समय बीच में स्पष्ट विराम आ जाए, तो संहिता बनेगी या नहीं?**
उत्तर – नहीं, क्योंकि व्यवधान आ गया; संहिता (व्यवधान-रहित निकटता) नहीं बनेगी।

**प्रश्न 36 (कठिन). "वाक् + ईश:" में 'क्' और 'ई' के बीच तुम विराम नहीं देते–तो संधि क्यों होती है?**
उत्तर – क्योंकि 'क्' और 'ई' के बीच व्यवधान नहीं है, इसलिए संहिता बनती है; संहिता की स्थिति में ही संधिकार्य होते हैं।

### » सम्प्रसारण (इक् का यण्-स्थान पर प्रयोग)

**प्रश्न 37 (आसान). यण् (य्, व्, र्, ल्) के स्थान पर कौन आते हैं?**
उत्तर – इक् (इ, उ, ऋ, ऌ)

**प्रश्न 38 (आसान). "यज्-इज् ?"**
उत्तर – इज्यते

**प्रश्न 39 (मध्यम). "वच्-उच् ?" सम्प्रसारण के अनुसार लिखो।**
उत्तर – उच्यते

**प्रश्न 40 (कठिन). अगर किसी रूप-निर्माण में "ल्" (यण्) के बाद इक् लगना हो, तो इक् में कौन-कौन संभावित हैं? (संकेत: सम्प्रसारण नियम के अनुसार)**
उत्तर – इक् = इ, उ, ऋ, ऌ (इनमें से) यह निर्भर करेगा कि कौन-सा यण्-ध्वनि के साथ नियत रूप कौन सा बैठता है, पर इक् की सूची यही है।

## हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

**उदाहरण 1. प्रश्न: व्याकरण में संज्ञा की आवश्यकता बताइए–स्पष्टता और लाघव (संक्षेप) से क्या तात्पर्य है?**

› पहले यह समझो कि व्याकरण में हर व्यक्ति/पदार्थ को पहचानने के लिए नाम चाहिए
› ऐसा नाम तय करने से नियम बनाते समय बार-बार लंबा वर्णन नहीं करना पड़ता
› इसी से स्पष्टता आती है–कक्षा को समझ आता है कि कौन-सी वस्तु/व्यक्ति किस नियम में आएगी
› और लाघव होता है–कम शब्दों में काम चल जाता है

**उत्तर – संज्ञा व्याकरण में व्यक्ति/पदार्थ की पहचान के लिए दिया गया नाम है। इससे नियम बनाते समय बार-बार वही बात नहीं लिखनी पड़ती, इसलिए व्याकरण-प्रक्रिया में स्पष्टता आती है और लाघव (संक्षेप) होता है–कम शब्दों में नियम लागू हो जाते हैं।**

**उदाहरण 2. निम्न में आगम (मित्रवत् संयोग/जुड़ाव) के आधार पर संधि/संयुक्त रूप लिखो: वृक्ष + छाया**

› पहले शब्द 'वृक्ष' के अंत में 'अ' की ध्वनि और दूसरे शब्द 'छाया' की शुरुआत/'छ' की ध्वनि पर ध्यान दो।
› अब देखो दोनों के बीच कौन-सी ध्वनि मित्रवत् जुड़ती है।
› 'अ' और 'छ' के बीच 'च्' का आगम होता है।
› जुड़ाव के बाद नया संयुक्त रूप बनाओ: 'वृक्ष' + 'च्' + 'छाया'.

**उत्तर – वृक्ष + छाया  वृक्षच्छाया**

**उदाहरण 3. संधि-विचार करते हुए दिखाओ कि "यदि + अपि" का रूप "यद्यपि" कैसे बनता है, और बताओ कि यहाँ कौन-सा आदेश हुआ है।**

› दिए गए पद हैं: "यदि" और "अपि"।
› दोनों के मिलने पर जो परिवर्तन दिखता है, वह अंतिम रूप "यद्यपि" है।
› "यदि" में 'इ' (इकार) का रूप बदलकर 'य्' हो जाता है।
› अब ध्यान दो: यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' आ बैठा है–यानी हटकर दूसरे वर्ण का उसी स्थान पर प्रतिस्थापन हुआ।
› इसलिए यह "आदेश" है, विशेष रूप से 'इ' के स्थान पर 'य्' का आदेश।

**उत्तर – "यदि + अपि" = "यद्यपि" बनता है क्योंकि 'इ' के स्थान पर 'य्' का आदेश हुआ–स्थान-पर प्रतिस्थापन ही आदेश है।**

**उदाहरण 4. "महत्" शब्द में उपधा कौन-सा वर्ण/उपधा कहलाएगा?**

› सबसे पहले शब्द के अंतिम वर्ण को पहचानो: "महत्" में अंतिम वर्ण "त्" है।
› अब अंतिम "त्" के ठीक पहले जो वर्ण आता है, उसे देखो–"ह" और उसके साथ "अ" रूप आता है।
› किताब के उदाहरण के अनुसार यहाँ "अ" को उपधा संज्ञक माना गया है।

**उत्तर – "महत्" में उपधा संज्ञक 'अ' (जो 'ह' के साथ 'त्' के ठीक पहले है) है।**

**उदाहरण 5. दिए गए रूपों में बताइए कौन-सा 'पद' बन रहा है और कौन 'अपद' है: (i) रामः (ii) भवतिति (iii) पठ् (iv) केवल राम**

› देखो 'पद' का नियम: "सुप्तिङन्तं पदम्"–यानि सुबंत/तिङंत रूप।
› रामः में विभक्ति (प्रथमा) जुड़कर यह सुबंत बना–इसलिए यह पद है।
› भवतिति में तिङंत-रूप (क्रिया का वाक्य-योग्य रूप) है–इसलिए यह पद है।
› पठ् धातु का मूल रूप है; बिना तिङंत बने यह वाक्य-योग्य नहीं–इसलिए यह अपद है।
› 'केवल राम' में विभक्ति तय नहीं है; वाक्य के लिए पर्याप्त पद-संज्ञा नहीं बनती–इसलिए यह अपद माना जाएगा।

**उत्तर – पद: (i) रामः, (ii) भवतिति. अपद: (iii) पठ्, (iv) केवल राम.**

**उदाहरण 6. निष्ठा के माध्यम से भूतकालिक क्रियापद का रूप कौन-सा बनेगा–यह बताओ: 'गत्' धातु पर निष्ठा का प्रयोग होने पर 'गतः' और 'गतवान्' में भूतकाल कौन-से प्रत्यय से दिख रहा है?**

› भूतकालिक क्रियापद बनाने में निष्ठा का उपयोग होता है।

› निष्ठा = क्त (त) और क्तवतू (तवत्)।

› 'गतः' में निष्ठा का क्त (त) रूप लगा है–इसी से 'भूतकाल' का संकेत आता है।

› 'गतवान्' में निष्ठा का क्तवतू (तवत्) रूप लगा है–इसी से 'भूतकाल' का संकेत आता है।

**उत्तर – 'गतः' में क्त (त) द्वारा निष्ठा हुई है, और 'गतवान्' में क्तवतू (तवत्) द्वारा निष्ठा हुई है–दोनों से भूतकालिक क्रियापद बनते हैं।**

**उदाहरण 7. 'भवति' में विकरण पहचानो: बताओ 'भू' और 'तिति' के बीच कौन-सा विकरण आया है और रूप कैसे बनेगा।**

› रूप देखें: भवति

› अब तोड़ो: 'भू' + (विकरण) + 'तिति'

› किताब के अनुसार 'भू' और 'तिति' के बीच 'शप्' होता है

› शप् का रूप 'अ' है, इसलिए जोड़ बनता है: भू + अ + तिति

› इससे विकरण 'अ' आकर ध्वनि-संयोजन से 'भवति' बनाता है

**उत्तर – 'भवति' में विकरण = शप् (अ) है। रूप-विन्यास: भू + अ + तिति.**

**उदाहरण 8. दिए गए वाक्य 'रामस्य ग्रन्थः' में संयोग बताइए। (संयोग का अर्थ: हलों की व्यवधान-रहित समीपता)**

› पहले 'रामस्य' में देखें: 'स्' (श्/सवर्ण का हल्) के बाद तुरंत 'य्' (हल्) आता है–बीच में स्वर नहीं।

› इसलिए 'स् + य्' का संयोग मानेंगे।

› अब 'ग्रन्थः' में देखें: 'ग्' के बाद 'र्' आता है और 'न्' के बाद 'थ्' आता है–ये जोड़ी-जोड़ी हलों की समीपता है।

› इसलिए 'ग् + र्' और 'न् + थ्'–दोनों संयोग हैं।

**उत्तर – 'रामस्य' में 'स्+य्' का संयोग; 'ग्रन्थः' में 'ग्+र्' और 'न्+थ्' के संयोग।**

**उदाहरण 9. संधि-कार्य के लिए बताओ कि "वाक् + ईशः" में संहिता बनेगी या नहीं, और परिणामी पद क्या होगा।**

› पहले जांचो–क्या 'वाक्' के अंतिम वर्ण 'क्' और 'ईश' के प्रथम वर्ण 'ई' के बीच बोलते समय कोई विराम/व्यवधान आता है?

› मान लो तुम शब्दों को जोड़कर एक साथ बोल रहे हो–'क्' और 'ई' के बीच रुकावट नहीं होती, इसलिए अत्यन्त निकटसमीपता (व्यवधान-रहित) बनती है–यानी संहिता है।

› क्योंकि संहिता की स्थिति है, इसलिए संधि-कार्य होगा।

› दिए गए उदाहरण के अनुसार "वाक् + ईशः" से संधि होकर "वागीशः" पद बनता है।

**उत्तर – हाँ, संहिता बनेगी (व्यवधान-रहित निकटता), इसलिए संधि होकर परिणामी पद: "वागीशः"।**

**उदाहरण 10. निम्न धातु-रूप में सम्प्रसारण करके सही रूप लिखो: वच्-उच् के बाद "उच्यते" रूप बनाइए।**

› पहले पहचानो कि यण् कौन-सा है: "वच्" में "व्" आता है, जो यण् (य्, व्, र्, ल्) के अंतर्गत है।

› अब नियम लगाओ: यण्-स्थान पर इक् का प्रयोग।

› इक् में "व्" की जगह कौन आता है? यहाँ "व् उ" (उ) होता है।

› तो "उच्" बनता है, और आगे "यते" लगने से पूरा रूप "उच्यते" बनता है।

**उत्तर – वच्-उच् उच्यते**

## बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

- परिभाषा/कारण जरूर लिखो: स्पष्टता और लाघव।
- आगम पूछे तो उत्तर में 'कहाँ' (बीच) और 'कौन-सा वर्ण'–दोनों लिखना।

- उदाहरण में हमेशा बताओ–कौन-सा वर्ण हटकर किस स्थान पर आया।
- संधि/आदेश वाले सवाल में पहले उपधा निकालो, फिर नियम लागू करो।
- अपदं न प्रयुञ्जीत वाली लाइन लिखकर उदाहरण (पठ्/नम्/वद्) जरूर बताएं।
- निष्ठा का अर्थ (क्त + क्तवतू) और उदा. 'गत:, गतवान्' लिखना सुनिश्चित करें।
- भवति जैसे उदाहरण में धातु-तिङ् के बीच वाला 'अ/य/नु' लिखकर विकरण नाम जरूर लिखो।
- संधि/संहिता के सवालों में पहले संयोग पहचानो–फिर नियम लगाओ।
- हर संधि प्रश्न में पहले लिखो: संहिता (व्यवधान-रहित) है या नहीं।
- NCERT में दिए गए उदाहरण जैसे "यज्-इज्" और "वच्-उच्" जरूर याद करो–आते हैं बोर्ड/टेस्ट में।

## एक नज़र में रिवीज़न

› - संज्ञा: पहचान का नाम, लाभ: स्पष्टता + लाघव
› - आगम = मित्रवत् संयोग से बीच में जुड़ाव
› आदेश: वर्ण हटे, जगह पर दूसरा बैठा।
› उपधा = अंतिम वर्ण के ठीक पहले
› पद = सुप्तिङन्त; अपद को वाक्य में नहीं।
› - निष्ठा: क्त + क्तवतू; भूतकालिक क्रिया बनती है।
› - धातु-तिङ् के बीच: शप्(अ), श्यन्(य), श्नुनु(नु) = विकरण
› - हल-हल, बीच में स्वर नहीं = संयोग
› - संहिता = बिना व्यवधान निकटसमीपता; संधि वहीं होती है।
› यण् (य/व/र/ल) इक् (इ/उ/ऋ/ऌ)